अण्डमान निकोबार
द्वीप समाचार
संख्या 38 श्री विजय पुरम, रविवार, 08 फरवरी 2026 web: dt.andaman

वैज्ञानिक पद्धति से सुअर पालन के बारे में 25 प्रतिभागी प्रशिक्षित

श्री विजय पुरम, 7 फरवरी।

केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, श्री विजय पुरम ने आईसीएआर–कृषि विज्ञान केंद्र, सीपीघाट (दक्षिण अण्डमान) के सहयोग से 3 से 5 फरवरी, 2026 तक "वैज्ञानिक पद्धति से सुअर पालन पर जानकारी एवं जागरूकता"" विषय पर "तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम" आयोजित किया। इस कार्यक्रम में कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. जय सुंदर, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएआरआई ने की तथा उन्होंने लाभकारी सुअर पालन हेतु अपनाए जाने वाले विभिन्न उपायों पर प्रकाश डाला। तकनीकी सत्रों का संचालन विशेषज्ञों द्वारा किया गया, जिनमें डॉ. जकरियाह जॉर्ज (विषय विशेषज्ञ) ने वैज्ञानिक सुअर पालन पद्धतियों का अवलोकन प्रस्तुत किया तथा सुअर उत्पादों, विपणन माध्यमों की जानकारी दी। साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों को "वीबी–राम जी बिल' के बारे में भी संक्षेप में जानकारी प्रदान की।

डॉ. पी. पेरूमल (वरिष्ठ वैज्ञानिक) ने सुअरों में होने वाली सामान्य बीमारियों, उनके प्रबंधन तथा द्वीपीय परिस्थितियों के अनुरूप प्रजनन प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। डॉ. पी.ए. बाला (प्रधान वैज्ञानिक) ने भोजन प्रणाली, संतुलित आहार निर्माण तथा देशी सुअर पालन के माध्यम से आय वृद्धि की रणनीतियों पर जानकारी दी। वहीं डॉ. आर.आर. अलीएथोड़ी (वरिष्ठ वैज्ञानिक) ने प्रजनन एवं आनुवंशिक चयन रणनीतियों पर चर्चा करते हुए श्रेष्ठ जर्मप्लाज्म के लाभों पर बल दिया।

व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रतिभागियों ने पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग, डॉलीगंज स्थित सुअर पालन

इकाई का भ्रमण किया, जहां डॉ. सुभाष पालवे, वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी एवं उनकी टीम ने इकाई संचालन, चारा प्रबंधन, एज़ोला की खेती, चाफ कटर का उपयोग तथा हाइड्रोपोनिक चारा उत्पादन की जानकारी दी।

प्रतिभागियों ने पशु विज्ञान प्रभाग, आईसीएआर–सीआईएआरआई की सुअर पालन इकाई का भी दौरा किया, जहां डॉ. बाला ने दैनिक सुअर पालन प्रबंधन पद्धतियों की जानकारी दी। सुश्री स्नेहा साहनी एवं श्री अभिषेक देसाई ने गेंटलों के लिए आयरन थेरेपी, गेंटले के चयन प्रक्रिया, डॉकिंग तथा नीडल टूथ हटाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कार्यक्रम का समापन डॉ. वाई. रामकृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, केवीके, दक्षिण अण्डमान के मार्गदर्शन एवं सुझावों के साथ हुआ। उन्होंने स्थानीय संसाधनों के उपयोग तथा चारा की कमी की समस्या के समाधान पर ज़ोर देते हुए पशुधन पालन में लाभ बढ़ाने की आवश्यकता बताई।